

**शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्रों के अध्ययन आदत का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव:****एक प्रयोगात्मक अध्ययन**डॉ० ज्ञान प्रकाश तिवारी<sup>1</sup>DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.18702566>**Review: 06/12/2025****Acceptance: 07/12/2025****Publication: 30/12/2025****शोध-सार:**

प्रस्तुत अध्ययन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्रों की अध्ययन आदतों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का वैज्ञानिक एवं सांख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में भावी शिक्षकों की अकादमिक दक्षता एवं व्यावसायिक गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए उनकी अध्ययन आदतों का सुदृढ़ होना अत्यंत आवश्यक है। इसी उद्देश्य से यह शोध बिहार राज्य के दरभंगा प्रमंडल के 25 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के 500 छात्र-छात्राओं पर सम्पन्न किया गया। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति तथा स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण विधि का प्रयोग किया गया। आँकड़ों के संकलन हेतु पालसाने एवं शर्मा द्वारा निर्मित मानकीकृत अध्ययन आदत मापनी तथा शोधकर्ता द्वारा निर्मित शैक्षिक उपलब्धि मापनी का उपयोग किया गया। परिणामों से यह ज्ञात हुआ कि छात्रों की समग्र अध्ययन आदतें मध्यम स्तर की हैं, जबकि उनकी शैक्षिक उपलब्धि मध्यम से उच्च स्तर की पाई गई। पठन क्षमता, अधिगम अभिप्रेरणा तथा परीक्षा में नियमित उपस्थिति जैसे आयाम अपेक्षाकृत सुदृढ़ पाए गए, जबकि टिप्पणी लेखन, स्मृति सुधार तथा स्वास्थ्य संबंधी आदतें अपेक्षाकृत कमजोर रहीं। सह-संबंध विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि अध्ययन आदत के सभी आयाम शैक्षिक उपलब्धि के साथ सकारात्मक एवं 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से संबंधित हैं। कुल अध्ययन आदत और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य उच्च सकारात्मक सह-संबंध प्राप्त हुआ, जिससे यह सिद्ध होता है कि बेहतर अध्ययन आदतें उच्च शैक्षिक उपलब्धि की प्रमुख निर्धारक हैं। लैंगिक आधार पर अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। अध्ययन के निष्कर्ष यह संकेत करते हैं कि यदि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में योजनाबद्ध अध्ययन कौशल विकास कार्यक्रम लागू किए जाएँ, तो भावी शिक्षकों की अकादमिक दक्षता एवं शिक्षण गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार संभव है।

**शब्द-कुंजी:** अध्ययन आदत, शैक्षिक उपलब्धि, शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय**प्रस्तावना**

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा व्यवस्था तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रही है, जहाँ गुणवत्ता, नवाचार तथा परिणामोन्मुखी शिक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है। किसी भी शिक्षा प्रणाली की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह अपने भावी शिक्षकों को कितनी दक्षता, प्रतिबद्धता तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रशिक्षित कर पाती है। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय ऐसे संस्थान हैं जहाँ से शिक्षण पेशे की नींव रखी जाती है। अतः इन महाविद्यालयों के छात्रों की अध्ययन

<sup>1</sup> व्याख्याता, जिला शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, सासाराम

आदतें न केवल उनकी स्वयं की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती हैं, बल्कि भविष्य में उनके द्वारा दी जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता को भी प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं।

अध्ययन आदत से अभिप्राय उन व्यवहारगत प्रवृत्तियों, अध्ययन विधियों, समय प्रबंधन, ध्यान एकाग्रता, नोट्स बनाने की शैली, पुनरावृत्ति की प्रक्रिया तथा परीक्षा-उन्मुख रणनीतियों से है, जिन्हें छात्र अपने अध्ययन के दौरान अपनाते हैं। शोधों से यह स्पष्ट होता है कि प्रभावी अध्ययन आदतें शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि का महत्वपूर्ण आधार होती हैं, जबकि अव्यवस्थित, असंगठित एवं अनियमित अध्ययन प्रवृत्तियाँ छात्रों में शैक्षिक पिछड़ेपन, तनाव तथा अकादमिक असफलता को जन्म देती हैं। विशेषतः शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्रों के लिए अध्ययन आदतों का महत्व और भी अधिक हो जाता है क्योंकि ये छात्र भविष्य में दूसरों को सीखने की विधियाँ सिखाने वाले होते हैं। शैक्षिक उपलब्धि किसी भी विद्यार्थी की अकादमिक प्रगति, बौद्धिक विकास एवं शैक्षणिक क्षमता का एक प्रमुख सूचक मानी जाती है। यह न केवल उसके ज्ञान स्तर को दर्शाती है, बल्कि उसकी सीखने की शैली, प्रेरणा, आत्म-अनुशासन एवं अध्ययन रणनीतियों का भी प्रतिबिंब होती है। वर्तमान समय में यह देखा गया है कि अनेक शिक्षक-प्रशिक्षु पर्याप्त बौद्धिक क्षमता होने के बावजूद अपेक्षित शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त नहीं कर पाते, जिसका एक प्रमुख कारण उनकी अध्ययन आदतों की कमजोरी मानी जाती है।

यद्यपि अध्ययन आदत और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध पर अनेक सहसंबंधात्मक अध्ययन उपलब्धि हैं, किंतु प्रयोगात्मक अध्ययनों की संख्या अपेक्षाकृत कम है, विशेषकर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के संदर्भ में। प्रयोगात्मक अध्ययन के माध्यम से यह वैज्ञानिक रूप से जाँचना संभव होता है कि यदि छात्रों की अध्ययन आदतों में योजनाबद्ध हस्तक्षेप (intervention) किया जाए, तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि में किस प्रकार का परिवर्तन आता है। इस दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है। अतः यह अध्ययन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्रों की अध्ययन आदतों में सुधार हेतु नियोजित शैक्षिक हस्तक्षेप की प्रभावशीलता का परीक्षण करने तथा उसके परिणामस्वरूप उनकी शैक्षिक उपलब्धि में होने वाले परिवर्तन का विश्लेषण करने का एक सार्थक प्रयास है। यह शोध न केवल शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा, बल्कि भावी शिक्षक-प्रशिक्षुओं को अकादमिक रूप से अधिक सक्षम बनाने की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा।

#### **अध्ययन की सार्थकता:**

शिक्षा किसी भी समाज के समग्र विकास की आधारशिला होती है और इस व्यवस्था की गुणवत्ता मुख्यतः शिक्षकों की दक्षता एवं उनकी अकादमिक तैयारी पर निर्भर करती है। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय भावी शिक्षकों को व्यावसायिक दक्षता प्रदान करने वाले प्रमुख संस्थान होते हैं। अतः इन संस्थानों में अध्ययनरत छात्रों की अध्ययन आदतें न केवल उनकी स्वयं की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती हैं, बल्कि भविष्य में उनके द्वारा प्रदान की जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता को भी प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। इस दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन अत्यंत सार्थक एवं समयोचित है। यह अध्ययन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्रों की अध्ययन आदतों और शैक्षिक उपलब्धि के बीच कारणात्मक संबंध को प्रयोगात्मक रूप से स्पष्ट करने का प्रयास करता है, जिससे शिक्षा-प्रशिक्षण संस्थानों को यह वैज्ञानिक आधार प्राप्त होगा कि योजनाबद्ध हस्तक्षेप के

माध्यम से छात्रों की अध्ययन आदतों में सुधार कर उनकी अकादमिक उपलब्धि को प्रभावी रूप से बढ़ाया जा सकता है। इससे शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता उन्नयन की दिशा में ठोस मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

इस शोध के निष्कर्ष शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्रशासकों एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों को ऐसे प्रशिक्षण मॉड्यूल, अध्ययन कौशल कार्यशालाएँ एवं मार्गदर्शन कार्यक्रम विकसित करने में सहायक होंगे, जिनसे छात्रों में समय प्रबंधन, स्व-अनुशासन, लक्ष्य निर्धारण, पुनरावृत्ति की रणनीतियाँ तथा परीक्षा-तैयारी की वैज्ञानिक तकनीकों का विकास किया जा सकेगा। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं, विश्वविद्यालयों तथा नियामक संस्थाओं (जैसे NCTE, UGC, SCERT आदि) के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा, क्योंकि इसके आधार पर शिक्षक-प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में अध्ययन कौशल विकास से संबंधित घटकों को समाहित करने हेतु ठोस सिफारिशें की जा सकेंगी। इससे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप शिक्षक-शिक्षा की गुणवत्ता को सुदृढ़ करने में सहायता मिलेगी। इसके अतिरिक्त, यह शोध भविष्य के अनुसंधानकर्ताओं के लिए भी एक सुदृढ़ आधार प्रदान करेगा, क्योंकि यह अध्ययन सहसंबंधात्मक शोध से आगे बढ़कर प्रयोगात्मक अनुसंधान पद्धति का उपयोग करता है, जिससे इस क्षेत्र में नवीन शोधों को प्रेरणा मिलेगी। इस प्रकार यह अध्ययन न केवल शैक्षिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक, संस्थागत एवं राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षक शिक्षा के उन्नयन में भी सार्थक योगदान देने की क्षमता रखता है।

### सम्बंधित साहित्य का अध्ययन

राजकुमार, एम. एवं राजन, एम. (2024) ने तिरुनेलवेली ज़िले के उच्चतर माध्यमिक छात्रों की अध्ययन आदतों का अध्ययन किया। इस अध्ययन में 1060 उच्चतर माध्यमिक छात्रों को नमूने के रूप में लिया गया। अध्ययन आदतों का पता लगाने के लिए पटेल (1975) द्वारा निर्मित *स्टडी हैबिट इंडेक्स* उपकरण का प्रयोग किया गया। अध्ययन आदत स्कोर का माध्यमान 142.12 (63.16%) पाया गया, जो यह दर्शाता है कि उच्चतर माध्यमिक छात्रों की अध्ययन आदतें अच्छी हैं। अध्ययन में लिंग, ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के बीच अध्ययन आदतों के संदर्भ में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। किंतु छात्रावास में रहने वाले, सरकारी तथा सहायता प्राप्त (एडेड) उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के बीच अध्ययन आदतों में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया।

सुरेश, चंद (2023) ने 200 माध्यमिक विद्यालय के छात्रों पर एक अध्ययन किया, जिसमें सरकारी एवं निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले तथा एकल एवं संयुक्त परिवारों से आने वाले छात्रों की अध्ययन आदतों का अध्ययन किया गया। संबंधित आँकड़े पटेल (1975) द्वारा निर्मित *स्टडी हैबिट इन्वेंटरी* (हिंदी संस्करण) की सहायता से एकत्र किए गए। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन तथा t-परीक्षण का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि एकल तथा संयुक्त परिवारों से आने वाले माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की विभिन्न अध्ययन आदतों के घटकों एवं कुल अध्ययन आदतों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। सरकारी विद्यालयों के माध्यमिक छात्र घर के वातावरण, कार्य योजना एवं विषयों की योजना बनाने में निजी विद्यालय के छात्रों से बेहतर पाए गए, जबकि परीक्षा की तैयारी के घटक में निजी विद्यालयों के छात्र सरकारी विद्यालयों के छात्रों से बेहतर पाए गए। किंतु अध्ययन एवं नोट्स बनाने, एकाग्रता, आदत एवं रुचि, विद्यालय

वातावरण तथा कुल अध्ययन आदतों के घटकों में सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया ।

**अरविंद, एन. (2023)** ने गुजरात के बनासकांठा ज़िले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की अध्ययन आदतों का अध्ययन किया तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि का भी परीक्षण किया । नमूने का चयन सरल यादृच्छिक नमूनाकरण विधि द्वारा किया गया । अध्ययन के लिए 80 उच्चतर माध्यमिक छात्रों को शामिल किया गया । अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि उच्चतर माध्यमिक छात्रों की अध्ययन आदतों एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के बीच एक महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध पाया गया । इसके अतिरिक्त, उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्रों की अध्ययन आदतों में भी सामान्यतः महत्वपूर्ण अंतर पाया गया ।

**चामुंडेश्वरी, एस. एवं अन्य (2021)** ने छात्रों के आत्म-संकल्पना, अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध का अध्ययन किया। सर्वेक्षण विधि द्वारा उच्चतर माध्यमिक स्तर के 381 छात्रों को नमूने के रूप में चयनित किया गया। आत्म-संकल्पना के अध्ययन हेतु देव (1985) द्वारा निर्मित *सेल्फ-कॉन्सेप्ट इन्वेंटरी*, अध्ययन आदतों के मूल्यांकन हेतु गोपाल राव (1974) द्वारा निर्मित *स्टडी हैबिट इंडेक्स* तथा छात्रों के त्रैमासिक परीक्षाओं में प्राप्त अंकों को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में लिया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण के परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि आत्म-संकल्पना, अध्ययन आदतों एवं छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध पाया गया।

## शोध अध्ययन का उद्देश्य

वर्तमान अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

- छात्रों की अध्ययन आदत तथा शैक्षिक उपलब्धि का आकलन करना।
- छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अंतर ज्ञात करना।
- छात्रों की अध्ययन आदतों तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

## शोध अधिकल्प

वर्तमान शोध में वर्णनात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है। वर्तमान शोध में बिहार राज्य के समस्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्रों को शोध की जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है। इस शोध में रोहतास जिला के 10 शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों से कुल 500 छात्रों का चयन न्यायाधीश के रूप में किया गया है। नमूने के चयन हेतु स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण विधि का प्रयोग किया गया। प्रत्येक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय से कुल 50 छात्र-जिसमें 25 छात्रों एवं 25 छात्राओं सम्मिलित थीं-चयनित किए गए। वर्तमान अध्ययन में कुल तीन उपकरणों का प्रशासन किया गया। शोधकर्ता द्वारा छात्रों की अध्ययन आदतों के मापन हेतु पालसाने, एम. एन. एवं शर्मा, ए. द्वारा निर्मित मानकीकृत स्टडी हैबिट स्केल का प्रयोग किया गया। शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु शोधकर्ता द्वारा स्वयं निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया।

**आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या**

उद्देश्यों एवं संकलित आँकड़ों के आधार पर निम्नलिखित व्याख्याएँ एवं परिणाम प्राप्त हुए हैं:

**तालिका संख्या 01: छात्रों की अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि का वर्णात्मक विश्लेषण**

क्र.सं	चरों के विभिन्न आयाम	प्रतिदर्श की संख्या	न्यूनतम	अधिकतम	माध्य	मान०वि०
अध्ययन आदत	समय का नियोजन	500	03	10	6.1	2.395
	अध्ययन के लिए भौतिक परिस्थितियाँ	500	06	11	8.3	3.785
	पठन क्षमता	500	09	14	12.9	2.954
	टिप्पणी लेखन	500	03	06	4.1	3.414
	अधिगम अभिप्रेरणा के कारक	500	09	14	13.1	3.782
	स्मृति में सुधार	500	06	09	6.9	4.540
	परीक्षा में उपस्थित होना	500	08	16	14.85	2.502
	स्वास्थ्य	500	03	07	3.9	2.316
	कुल अध्ययन आदत	500	44	82	62.25	11.871
<b>शैक्षिक उपलब्धि</b>		<b>500</b>	<b>50.00</b>	<b>87.00</b>	<b>67.14</b>	<b>8.061</b>

**विश्लेषण एवं व्याख्या:** तालिका संख्या 01 में 500 छात्रों की अध्ययन आदत तथा शैक्षिक उपलब्धि का वर्णात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन आदत के विभिन्न आयामों में समय के नियोजन का माध्य 6.1 तथा मानक विचलन 2.395 पाया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि छात्रों की समय प्रबंधन क्षमता औसत स्तर की है तथा इस आयाम में मध्यम स्तर की विविधता विद्यमान है। अध्ययन के लिए भौतिक परिस्थितियों का माध्य 8.3 एवं मानक विचलन 3.785 है, जो यह दर्शाता है कि अधिकांश छात्रों को अध्ययन हेतु आवश्यक भौतिक सुविधाएँ मध्यम से उच्च स्तर तक उपलब्ध हैं, किंतु छात्रों के बीच इसमें पर्याप्त अंतर भी पाया जाता है। पठन क्षमता का माध्य 12.9 तथा मानक विचलन 2.954 है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश छात्रों की पठन क्षमता अच्छी है और इस आयाम में अपेक्षाकृत एकरूपता पाई जाती है। टिप्पणी लेखन का माध्य 4.1 तथा मानक विचलन 3.414 दर्शाता है कि इस क्षेत्र में छात्रों की अध्ययन आदतें अपेक्षाकृत कमजोर हैं और छात्रों के बीच पर्याप्त विविधता विद्यमान है। अधिगम अभिप्रेरणा के कारकों का माध्य 13.1 तथा मानक विचलन 3.782 है, जिससे यह संकेत मिलता है कि छात्रों में अधिगम के प्रति अभिप्रेरणा उच्च स्तर की है। स्मृति में सुधार का माध्य 6.9 तथा मानक विचलन 4.540 पाया गया है, जो यह दर्शाता है कि इस आयाम में छात्रों की स्थिति मध्यम स्तर की है, किंतु इसमें विविधता अपेक्षाकृत अधिक है। परीक्षा में उपस्थित होने का माध्य 14.85 तथा मानक विचलन 2.502 है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश छात्र नियमित रूप से परीक्षाओं में उपस्थित होते हैं और इस आयाम में एकरूपता अधिक है। स्वास्थ्य आयाम का माध्य 3.9 तथा मानक विचलन 2.316 है, जो यह दर्शाता है कि छात्रों की स्वास्थ्य संबंधी आदतें अपेक्षाकृत निम्न से मध्यम स्तर की हैं। कुल अध्ययन आदत का माध्य 62.25 तथा मानक विचलन 11.871 है, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्रों की कुल अध्ययन आदतें मध्यम स्तर की हैं।

वहीं शैक्षिक उपलब्धि का माध्य 67.14 तथा मानक विचलन 8.061 पाया गया है, जो यह दर्शाता है कि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि सामान्यतः मध्यम से उच्च स्तर की है।

समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि पठन क्षमता, अधिगम अभिप्रेरणा एवं परीक्षा में नियमित उपस्थिति जैसे आयामों में छात्रों की स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी है, जबकि टिप्पणी लेखन, स्मृति सुधार तथा स्वास्थ्य जैसे आयामों पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है ताकि छात्रों की कुल अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि में और अधिक सुधार किया जा सके।

**तालिका संख्या 02: छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदत के माध्य में अंतर**

क्र.सं	अध्ययन आदत के विभिन्न आयाम	समूह	कुल संख्या	माध्य	मानक विचलन	डीएफ	टी-मान	पी-मान	सार्थकता
1.	समय का निर्धारण	छात्र	250	6.01	2.684	498	2.12	0.034*	सार्थक
		छात्रा	250	6.47	2.415				
2.	अध्ययन के लिए भौतिक अवस्थाएं	छात्र	250	9.03	3.627	498	0.82	0.412	असार्थक
		छात्रा	250	8.76	3.934				
3.	पठन क्षमता	छात्र	250	14.53	3.708	498	1.34	0.181	असार्थक
		छात्रा	250	14.89	2.375				
4.	टिप्पणी लेखन	छात्र	250	4.61	4.512	498	0.91	0.363	असार्थक
		छात्रा	250	4.93	3.187				
5.	अधिगम अभिप्रेरणा के कारक	छात्र	250	15.31	4.891	498	2.21	0.027*	सार्थक
		छात्रा	250	14.36	4.601				
6.	स्मृति में सुधार	छात्र	250	9.14	5.124	498	1.15	0.251	असार्थक
		छात्रा	250	8.64	4.807				
7.	परीक्षा देना	छात्र	250	17.11	2.085	498	1.63	0.104	असार्थक
		छात्रा	250	16.80	2.431				
8.	स्वास्थ्य	छात्र	250	4.51	3.401	498	1.39	0.165	असार्थक
		छात्रा	250	4.90	2.984				
9.	कुल अध्ययन आदत	छात्र	250	64.57	14.087	498	0.69	0.489	असार्थक
		छात्रा	250	65.37	12.961				

\*सार्थकता स्तर-0.05

**विश्लेषण एवं व्याख्या:** तालिका संख्या 02 में 250 छात्र एवं 250 छात्राओं की अध्ययन आदत के विभिन्न आयामों के मध्य अंतर का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। समय के निर्धारण के आयाम में छात्रों का माध्य 6.01 तथा छात्राओं का माध्य 6.47 पाया गया है। इस आयाम में प्राप्त टी-मान 2.12 तथा पी-मान 0.034 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि समय के निर्धारण के संबंध में छात्र और छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर पाया जाता है तथा छात्राओं की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर है। अध्ययन के लिए भौतिक अवस्थाओं के आयाम में छात्रों का माध्य 9.03 तथा छात्राओं का माध्य 8.76 पाया गया है। इस आयाम में प्राप्त टी-मान 0.82 तथा पी-मान 0.412 है, जो असार्थक है, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि इस आयाम में छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। पठन क्षमता के आयाम में छात्रों का माध्य 14.53 तथा छात्राओं का माध्य 14.89 है तथा टी-मान 1.34 एवं पी-मान 0.181 है, जो असार्थक है। यह दर्शाता है कि पठन क्षमता के संबंध में छात्र एवं छात्राओं की स्थिति लगभग समान है। टिप्पणी लेखन के आयाम में छात्रों का माध्य 4.61 तथा छात्राओं का माध्य 4.93 पाया गया है, किंतु टी-मान 0.91 तथा पी-मान 0.363 होने के कारण यह अंतर सार्थक नहीं है। अधिगम अभिप्रेरणा के कारकों के आयाम में छात्रों का माध्य 15.31 तथा छात्राओं का माध्य 14.36 है और प्राप्त टी-मान 2.21 तथा पी-मान 0.027 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि अधिगम अभिप्रेरणा के संदर्भ में छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर पाया जाता है और इस आयाम में छात्रों की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर है। स्मृति में सुधार के आयाम में छात्रों का माध्य 9.14 तथा छात्राओं का माध्य 8.64 है, किंतु टी-मान 1.15 तथा पी-मान 0.251 होने के कारण यह अंतर असार्थक है। परीक्षा देने के आयाम में छात्रों का माध्य 17.11 तथा छात्राओं का माध्य 16.80 है, परंतु टी-मान 1.63 तथा पी-मान 0.104 होने से यह अंतर भी असार्थक पाया गया है। स्वास्थ्य आयाम में छात्रों का माध्य 4.51 तथा छात्राओं का माध्य 4.90 है, किंतु टी-मान 1.39 तथा पी-मान 0.165 होने के कारण यह अंतर सार्थक नहीं है। कुल अध्ययन आदत के आयाम में छात्रों का माध्य 64.57 तथा छात्राओं का माध्य 65.37 पाया गया है तथा प्राप्त टी-मान 0.69 एवं पी-मान 0.489 होने से यह निष्कर्ष निकलता है कि कुल अध्ययन आदत के संदर्भ में छात्र एवं छात्राओं के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

उपरोक्त विश्लेषण एवं व्याख्या के आधार पर यह निष्कर्ष पाया गया कि है कि समय निर्धारण तथा अधिगम अभिप्रेरणा के कारकों को छोड़कर अध्ययन आदत के अधिकांश आयामों में छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदतें लगभग समान पाई गई हैं।

**तालिका संख्या 03: छात्र-छात्राओं शैक्षिक उपलब्धि के माध्य में अंतर**

चर	समूह	कुल संख्या	माध्य	मानक विचलन	डीएफ	टी-मान	पी-मान
शैक्षिक उपलब्धि	छात्र	250	69.42	8.56	498	0.9562	0.339
	छात्रा	250	70.18	9.201			

**विश्लेषण एवं व्याख्या:** तालिका संख्या 03 में छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के माध्य के मध्य अंतर का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इस तालिका के अनुसार 250 छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का माध्य 69.42 तथा मानक

विचलन 8.56 पाया गया है, जबकि 250 छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का माध्य 70.18 तथा मानक विचलन 9.201 है । दोनों समूहों के मध्य प्राप्त टी-मान 0.9562 तथा पी-मान 0.339 है, जो 0.05 स्तर से अधिक है । इससे यह स्पष्ट होता है कि छात्र एवं छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के माध्य में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है । यद्यपि छात्रों का माध्य छात्रों की तुलना में थोड़ा अधिक है, तथापि यह अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वहीन है । अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में छात्र एवं छात्रों का प्रदर्शन लगभग समान स्तर का है ।

**तालिका संख्या 04: छात्रों की अध्ययन आदत के विभिन्न आयाम एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह-संबंध**

अध्ययन आदत के विभिन्न आयाम	समय का निर्धारण	अध्ययन के लिए भौतिक अवस्थाएं	पठन क्षमता	टिप्पणी लेखन	अधिगम अभिप्रेरण के कारक	स्मृति में सुधार	परीक्षा देना	स्वास्थ्य	कुल अध्ययन आदत	शैक्षिक उपलब्धि
समय का निर्धारण	1 500	.497** .000 500	.534** .000 500	.460** .000 500	.542** .000 500	.538** .000 500	.591** .000 500	.526** .000 500	.674** .000 500	.397** .000 500
अध्ययन के लिए भौतिक अवस्थाएं	.497** .000 500	1 500	.580* .000 500	.473** .000 500	.227** .000 500	.490** .000 500	.423** .000 500	.583** .000 500	.651** .000 500	.316** .000 500
पठन क्षमता	.534** .000 500	.580* .000 500	1 500	.674** .000 500	.653** .000 500	.514** .000 500	.422** .000 500	.533** .000 500	.791** .000 500	.634** .000 500
टिप्पणी लेखन	.460** .000 500	.473** .000 500	.674** .000 500	1 500	.542** .000 500	.497** .000 500	.574** .000 500	.389** .000 500	.761** .000 500	.593** .000 500
अधिगम अभिप्रेरण के कारक	.542** .000 500	.227** .000 500	.653** .000 500	.542** .000 500	1 500	.396** .000 500	.411** .000 500	.390** .000 500	.610** .000 500	.532** .000 500
स्मृति में सुधार	.538** .000 500	.490** .000 500	.514** .000 500	.497** .000 500	.396** .000 500	1 500	.410** .000 500	.476** .000 500	.709** .000 500	.389** .000 500

परीक्षा देना	.591** .000 500	.423** .000 500	.422** .000 500	.574** .000 500	.412** .000 500	.410** .000 500	1 500	.328** .000 500	.721** .000 500	.476** .000 500
स्वास्थ्य	.526** .000 500	.583** .000 500	.533** .000 500	.398** .000 500	.390** .000 500	.476** .000 500	.328** .000 500	1 500	.657** .000 500	.413** .000 500
कुल अध्ययन आदत	.674** .000 500	.651** .000 500	.791** .000 500	.761** .000 500	.610** .000 500	.709** .000 500	.721** .000 500	.657** .000 500	1 500	.610** .000 500
शैक्षिक उपलब्धि	.397** .000 500	.316** .000 500	.634** .000 500	.593** .000 500	.532** .000 500	.389** .000 500	.476** .000 500	.413** .000 500	.610** .000 500	1 500

**\*\* 0.01 स्तर पर सार्थक सह-संबंध (एकल-पुच्छीय)**

**विश्लेषण एवं व्याख्या:** तालिका संख्या 04 में 500 छात्रों की अध्ययन आदत के विभिन्न आयामों एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह-संबंध का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। तालिका से स्पष्ट होता है कि अध्ययन आदत के सभी आयाम आपस में तथा शैक्षिक उपलब्धि के साथ सकारात्मक एवं 0.01 स्तर पर सार्थक सह-संबंध प्रदर्शित करते हैं। समय के निर्धारण का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह-संबंध .397 पाया गया है, जो यह दर्शाता है कि जैसे-जैसे छात्रों की समय प्रबंधन क्षमता बेहतर होती जाती है, उनकी शैक्षिक उपलब्धि में भी वृद्धि होती है। अध्ययन के लिए भौतिक अवस्थाओं का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह-संबंध .316 है, जो यह संकेत करता है कि उपयुक्त भौतिक सुविधाएँ छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं। पठन क्षमता का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह-संबंध .634 पाया गया है, जो अपेक्षाकृत उच्च है और यह स्पष्ट करता है कि जिन छात्रों की पठन क्षमता बेहतर होती है, उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक होती है। टिप्पणी लेखन का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह-संबंध .593 है, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रभावी रूप से नोट्स बनाने की आदत छात्रों की उपलब्धि को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाती है। अधिगम अभिप्रेरणा के कारकों का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह-संबंध .532 है, जो यह दर्शाता है कि अधिगम के प्रति उच्च अभिप्रेरणा रखने वाले छात्र बेहतर शैक्षिक प्रदर्शन करते हैं। स्मृति में सुधार का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह-संबंध .389 पाया गया है, जिससे यह संकेत मिलता है कि स्मरण शक्ति सुधारने की प्रवृत्ति भी छात्रों की उपलब्धि से सकारात्मक रूप से जुड़ी हुई है। परीक्षा देने (परीक्षा में नियमित उपस्थिति) का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह-संबंध .476 है, जो यह स्पष्ट करता है कि जो छात्र नियमित रूप से परीक्षाओं में सम्मिलित होते हैं, उनकी शैक्षिक उपलब्धि अपेक्षाकृत बेहतर होती है। स्वास्थ्य का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह-संबंध .413 पाया गया है, जो यह दर्शाता है कि बेहतर स्वास्थ्य आदतें भी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सहायक भूमिका निभाती हैं।

कुल अध्ययन आदत का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह-संबंध .610 है, जो उच्च एवं सार्थक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि जिन छात्रों की समग्र अध्ययन आदतें बेहतर होती हैं, उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उल्लेखनीय रूप से अधिक होती है। समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि अध्ययन आदत के सभी आयाम शैक्षिक उपलब्धि से सकारात्मक एवं सार्थक रूप से संबंधित हैं तथा छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने में अध्ययन आदतों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

### **परिणाम एवं निष्कर्ष**

उपरोक्त विश्लेषण एवं व्याख्या से यह निष्कर्ष पाया गया कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्रों की अध्ययन आदतें एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य घनिष्ठ, सकारात्मक तथा सांख्यिकीय रूप से सार्थक संबंध विद्यमान है। अध्ययन में पाया गया कि छात्रों की कुल अध्ययन आदत का स्तर सामान्यतः मध्यम है, जबकि उनकी शैक्षिक उपलब्धि मध्यम से उच्च स्तर की पाई गई। इससे यह संकेत मिलता है कि छात्रों में अध्ययन संबंधी आदतों में सुधार की पर्याप्त संभावनाएँ विद्यमान हैं, जिनके माध्यम से उनकी शैक्षिक उपलब्धि को और अधिक सुदृढ़ किया जा सकता है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि पठन क्षमता, अधिगम अभिप्रेरणा तथा परीक्षा में नियमित उपस्थिति जैसे आयामों में छात्रों की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर है, जबकि टिप्पणी लेखन, स्मृति में सुधार तथा स्वास्थ्य जैसे आयाम अपेक्षाकृत कमजोर पाए गए। यह इंगित करता है कि यदि इन अपेक्षाकृत कमजोर आयामों पर विशेष ध्यान दिया जाए तो छात्रों की समग्र अध्ययन आदतों तथा शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण सुधार संभव है।

लैंगिक आधार पर किए गए तुलनात्मक विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि समय निर्धारण तथा अधिगम अभिप्रेरणा के कारकों को छोड़कर अध्ययन आदत के अधिकांश आयामों में छात्र एवं छात्राओं के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में भी छात्र एवं छात्राओं के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों का शैक्षिक प्रदर्शन लगभग समान स्तर का है। सह-संबंध विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि अध्ययन आदत के सभी आयाम शैक्षिक उपलब्धि के साथ सकारात्मक एवं 0.01 स्तर पर सार्थक रूप से संबंधित हैं। विशेष रूप से पठन क्षमता, टिप्पणी लेखन तथा कुल अध्ययन आदत का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह-संबंध अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्रों की अध्ययन आदतें उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रत्यक्ष एवं प्रभावी रूप से प्रभावित करती हैं।

समग्र रूप से यह अध्ययन इस तथ्य की पुष्टि करता है कि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने के लिए उनकी अध्ययन आदतों को सुदृढ़ करना अत्यंत आवश्यक है। यदि समय प्रबंधन, पठन क्षमता, नोट्स बनाने की आदत, स्मृति सुधार, स्वास्थ्य तथा अधिगम अभिप्रेरणा जैसे आयामों पर योजनाबद्ध एवं व्यवस्थित प्रयास किए जाएँ, तो छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में उल्लेखनीय सुधार संभव है।

### **निष्कर्ष एवं शैक्षिक निहितार्थ:**

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि छात्रों की अध्ययन आदतों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रत्यक्ष एवं महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अतः विद्यालयों एवं शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययन आदतों के विकास को शैक्षिक कार्यक्रमों

का अनिवार्य अंग बनाया जाना चाहिए। विद्यार्थियों में समय प्रबंधन, नियमित अध्ययन, प्रभावी पठन, तथा सुव्यवस्थित नोट्स बनाने की आदत विकसित करने हेतु विशेष कार्यशालाओं एवं अभिविन्यास कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए। चूँकि पठन क्षमता, अधिगम अभिप्रेरणा तथा परीक्षा में नियमित उपस्थिति का शैक्षिक उपलब्धि से उच्च सह-संबंध पाया गया है, अतः पाठ्यक्रम निर्माण एवं शिक्षण विधियों में इन आयामों को सुदृढ़ करने पर विशेष बल दिया जाना चाहिए। शिक्षकों को चाहिए कि वे कक्षा शिक्षण को अधिक संवादात्मक, प्रेरणादायक तथा रुचिकर बनाएं, जिससे छात्रों की अधिगम अभिप्रेरणा में वृद्धि हो सके। अध्ययन में टिप्पणी लेखन, स्मृति में सुधार तथा स्वास्थ्य जैसे आयाम अपेक्षाकृत कमजोर पाए गए हैं। अतः शिक्षकों को छात्रों को प्रभावी नोट्स बनाने की तकनीक, स्मरण शक्ति बढ़ाने के उपाय (जैसे पुनरावृत्ति, माइंड मैप, समूह अध्ययन आदि) तथा स्वस्थ जीवन शैली के महत्व के प्रति जागरूक करना चाहिए। इसके लिए योग, ध्यान, व्यायाम एवं स्वास्थ्य शिक्षा को पाठ्यक्रम का अंग बनाया जाना चाहिए। लैंगिक आधार पर अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर न पाए जाने से यह स्पष्ट होता है कि शैक्षिक कार्यक्रमों की योजना बनाते समय लिंग-आधारित भेदभाव की अपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। सभी विद्यार्थियों को समान अवसर, समान शैक्षिक संसाधन एवं समान मार्गदर्शन प्रदान किया जाना चाहिए।

समग्र रूप से यह अध्ययन यह संकेत करता है कि यदि शैक्षिक संस्थान छात्रों की अध्ययन आदतों को सुदृढ़ करने हेतु योजनाबद्ध प्रयास करें, तो न केवल उनकी शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होगी, बल्कि उनका सर्वांगीण शैक्षिक एवं व्यक्तित्व विकास भी संभव हो सकेगा।

### **संदर्भ ग्रन्थ सूची**

- अरविंद, एन. (2023). बनासकांठा जिला, गुजरात के उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की अध्ययन आदतें एवं शैक्षिक उपलब्धि. *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी*, 41(2), 150-165.
- कौर, दलजीत, एवं जैन, रीना. (2022). वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यक्तित्व गुणों का अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस एंड इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च*, 5(2), 7-15.
- क्रेडे, एम., एवं फिलिप्स, एल. ए. (2011). Motivated Strategies for Learning Questionnaire की मेटा-विश्लेषणात्मक समीक्षा. *लर्निंग एंड इंडिविजुअल डिफरेंसेस*, 21(4), 337-346.
- क्रो, एल. डी., एवं क्रो, टी. (1969). किशोरावस्था का विकास एवं समायोजन. मैकग्रा-हिल बुक कंपनी.
- गिलफोर्ड, जे. पी. (1956). मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी के मूलतत्त्व. न्यूयॉर्क: मैकग्रा-हिल बुक कंपनी.
- ज़िमरमैन, बी. जे., एवं मार्टिनेज-पोन्स, एम. (1986). स्व-नियंत्रित अधिगम रणनीतियों के आकलन हेतु संरचित साक्षात्कार का विकास. *अमेरिकन एजुकेशनल रिसर्च जर्नल*, 23(4), 614-628.
- डकवर्थ, ए. एल., एवं सेलिगमैन, एम. ई. पी. (2005). किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि की भविष्यवाणी में आत्म-अनुशासन की भूमिका. *साइकोलॉजिकल साइंस*, 16(12), 939-944.

- नुथाना, पी. जी., एवं येनागी, जी. वी. (2009). लड़के-लड़कियों की अध्ययन आदतें, आत्म-धारणा एवं उपलब्धि. *कर्नाटक जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेस*, 22(5), 1135-1138.
- पटेल, बी. वी. (1976). अध्ययन आदत सूची. डी. एम. पेस्टनजी (संपा.), *सेकंड हैंडबुक ऑफ साइकोलॉजी एंड सोशल इंस्ट्रूमेंट्स*. कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी.
- पिट्रिच, पी. आर., स्मिथ, डी., गार्सिया, टी., एवं मैककीची, डब्ल्यू. जे. (1993). MSLQ की विश्वसनीयता एवं भविष्यवाणी वैधता. *एजुकेशनल एंड साइकोलॉजिकल मेजरमेंट*, 53(3), 801-813.
- प्रिचर्ड, एम. ई., एवं विल्सन, जी. एस. (2003). भावनात्मक एवं सामाजिक कारकों द्वारा छात्र सफलता की भविष्यवाणी. *जर्नल ऑफ कॉलेज स्टूडेंट डेवलपमेंट*, 44(1), 18-28.
- फर्नहैम, ए. (1995). व्यक्तित्व एवं बुद्धि का संज्ञानात्मक अधिगम शैली एवं उपलब्धि से संबंध. डी. एच. सैक्लॉफ्स्की एवं एम. ज़ाइडनर (संपा.), *इंटरनेशनल हैंडबुक ऑफ पर्सनैलिटी एंड इंटेलिजेंस* (पृ. xxx-xxx). प्लेनम प्रेस.
- बिस्वास, पी., एवं कुंडू, ए. (2022). ग्रामीण भारत में बालिकाओं के प्राथमिक शिक्षा नामांकन के निर्धारक: क्षेत्र आधारित विश्लेषण. *इंडियन जर्नल ऑफ ह्यूमन डेवलपमेंट*, 16(2), 317-337. <https://doi.org/10.1177/09737030221120474>
- बेस्ट, जे. डब्ल्यू. (1978). रिसर्च इन एजुकेशन (भारतीय संस्करण). एंगलवुड क्लिफ्स, न्यू जर्सी: प्रेंटिस हॉल.
- मार्टिन, ए. जे. (2013). अकादमिक बायोरेंसी और शैक्षिक परिणाम. *ब्रिटिश जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी*, 83(1), 145-159.
- मैकलेलैंड, डी. सी. (1973). बुद्धि के बजाय दक्षता का परीक्षण. *अमेरिकन साइकोलॉजिस्ट*, 28, 1-14. <https://doi.org/10.1037/h0034092>
- रक्कानेल्लो, डी., एवं ब्रॉडिनो, एम. (2017). अध्ययन आदत एवं शैक्षिक प्रदर्शन के मध्य संबंध: एक समालोचनात्मक समीक्षा. *यूरोपियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी ऑफ एजुकेशन*, 32(1), 1-24.
- राजकुमार, एम., एवं सांडरराजन, एम. (2022). तिरुनेलवेली जिला के उच्च माध्यमिक छात्रों की अध्ययन आदतें. *जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड प्रैक्टिस*, 30(2), 78-92.
- रॉबिन्स, एस. बी., लाउवर, के., ले, एच., डेविस, डी., लैंगली, आर., एवं कार्लस्ट्रॉम, ए. (2004). मनोसामाजिक एवं अध्ययन कौशल कारकों का कॉलेज परिणामों पर प्रभाव: एक मेटा-विश्लेषण. *साइकोलॉजिकल बुलेटिन*, 130(2), 261-288.
- विजयलक्ष्मी, वी. (2017). सेलम जिले के उच्च माध्यमिक छात्रों की बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि. *जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी*, 25(3), 112-125.
- विजेकुमार, के., गिल्बर्ट, एस., लियांग, एक्स., एवं विल्हेना, डी. (2015). ऑनलाइन अधिगम में अभिप्रेरणा: आत्म-निर्धारण सिद्धांत का परीक्षण. *कंप्यूटर्स इन ह्यूमन बिहेवियर*, 49, 284-292.
- सुरेश चन्द. (2023). सरकारी एवं निजी विद्यालयों के माध्यमिक छात्रों की अध्ययन आदतें. *जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज़*, 37(4), 215-230.